Peer Reviewed Referred and UGC Listed Journal
(Journal No. 40776)

ISSN 2277 - 5730
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA

Volume-VIII, Issue-I
January - March - 2019
Matahi / Hindi

IMPACT FACTOR / INDEXING
2018 - 5.5
www.sjifactor.com

Ajanta Prakashan

ISSN 2277 - 5730
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA

Volume - VIII Issue - I Marathi / Hindi January - March - 2019

Peer Reviewed Referred and UGC Listed Journal

Journal No. 40776

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

IMPACT FACTOR / INDEXING
2018 - 5.5
www.sjifactor.com

❖ EDITOR ❖

Asst. Prof. Vinay Shankarrao Hatole
M.Sc (Maths), M.B.A. (Mktg.), M.B.A. (H.R.),
M.Drama (Acting), M.Drama (Prod. & Dir.), M.Ed.

❖ PUBLISHED BY ❖

Ajanta Prakashan
Aurangabad. (M.S.)

CONTENTS OF HINDI

अ.क्र.	लेख आणि लेखकाचे नाव	पृष्ठ क्र.
१	मानव समाज का मुकुट : संस्कृति **आर. अरूणा** **डॉ. जी. शांति**	१-४
२	विश्व दर्पण में साहित्य का विकास **डॉ. जी. शान्ति**	५-११
३	आधुनिक संदर्भ में बालसाहित्य की प्रमुखता **डॉ. जी. शान्ति**	१२-१४
४	बदलता साहित्य बदलते विचार 'महिला कथाकार के संदर्भ में' **प्रा. डॉ. रमा दुधमांडे** **डॉ. स्मृति चौधरी**	१५-१८
५	भूमंडलीकरण का भारतीय साहित्य एवं संस्कृति पर पडता प्रभाव **प्राचार्य डॉ. नाना एन. गायकवाड**	१९-२२
६	हिन्दी प्रवासी साहितय का विकास : महिला उपन्यासकारों के सन्दर्भ में **प्रा. डॉ. विनोदकुमार विलासराव वायचळ 'वेदार्थ'**	२३-२५
७	मंजूर एहतेशाम फी कहानी 'तहबीह' में चित्रित मुस्लीम विमर्श **प्रा. जाधव निर्मला लक्ष्मणराव**	२६-२८
८	समकालीन हिंदी और मराठी कथा साहित्य में नारीवाद : तुलनात्मक अध्ययन **प्रा. डॉ. चित्रा प्रकाश त्रिभुभवन**	२९-३२
९	तमस उपन्यास सांप्रदायिक दंगों का अध्ययन **Pr. Sawant P. B.**	३३-३७
१०	महिला लेखकाओं के कहानियों में नारी विमर्श **डॉ. शिल्पा जिवरग** **अनुराधा एस. रामेल्ला**	३८-४०
११	भारतीय संस्कृति और साहित्य **डॉ. ओमप्रकाश बन्सीलाल झंवर**	४१-४३
१२	वेदकाळातील स्त्री शक्ती - अदिति, उषा **प्रा. सौ. मेधा सचिन पाठे**	४४-४६

VOLUME - VIII, ISSUE - I - JANUARY - MARCH - 2019
AJANTA - ISSN 2277 - 5730 - IMPACT FACTOR - 5.5 (www.sjifactor.com)

६. हिन्दी प्रवासी साहितय का विकास : महिला उपन्यासकारों के सन्दर्भ में

प्रा. डॉ. विनोदकुमार विलासराव वायचळ 'वेदार्थ'
सहाय्यक प्राध्यापक, एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, व्यंकटेश महाराज वरिष्ठ महाविद्यालय, उस्मानाबाद.

'प्रवासी हिन्दी साहित्य' का तात्पर्य प्रवासी लोगों द्वारा लिखे साहित्य से है। सवाल यह उठता है ये साहित्य किस प्रकार विकासित होता है? ये प्रवासी लोग कौन हैं और इनके साहित्य की विशेषता या सुन्दरता क्या है, इसी से जुड़ा है इस साहित्य का स्वरूप तथा सौंदर्यशास्त्र! आजकल साहित्य में कई विमर्श प्रचलित हैं। स्त्री विमर्श, दलित विमर्श की भाँति इधर प्रवासी विमर्श ने भी जगह बनाई है। प्रवासी विमर्श की विशेषता यह है कि इसके अन्तर्गत रचनात्मक साहित्य अधिक लिखा गया है। इसके आलोचनात्मक पक्ष पर उतना बल नहीं दिया गया है।

हिन्दी के प्रसिद्ध साहित्यकार और आलोचक कमलेष्वर ने प्रवासी हिन्दी साहित्य पर टिप्पणी करते हुए कहा था कि 'रचना अपने मानदण्ड खुद तय करती है इसलिए उसके मानदण्ड बनाए नहीं जाएँगे। उन रचनाओं के मानदण्ड तय होंगे।'

प्रवासी भारतीयों की तीन श्रेणियाँ बनाई जा सकती हैं। एक श्रेणी में वे ल़ोग हैं, जो गिरमिटिया मजदूरों के रूप में फिजी, मॉरीशस, त्रिनिडाड, गुआना, दक्षिण अफ्रीका आदि देशों में भेजे गए थे। जो अपने साथ रामचरित मानस जैसे कालजयी रचना ले गये। दूसरी श्रेणी में अस्सी के दशक में मध्यपूर्व के खाड़ी देशों में गए अशिक्षित–अर्द्धशिक्षित, कुशल अथवा अर्द्धकुशल मजदूर आते हैं। तीसरी श्रेणी में अस्सी–नब्बे के दशक में गए सुशिक्षित मध्यवर्गीय लोग हैं जिन्होंने बेहतर भौतिक जीवन के लिए प्रवास किया।

इन तीन तरह की श्रेणियों में से, साहित्य के वर्तमान समय में, अन्तिम श्रेणी का ही प्रभुत्व जैसा दिखाई देता है। गिरमिटिय। मजदूरों की बाद की पीढ़ियों में से अधिकांश ने रोजगार तथा अन्य कारणों से हिन्दी या भोजपुरी के अलावा दूसरी अन्तरराष्ट्रीय भाषाओं को अपना लिया। मॉरीशस के स्व. अभिमन्यु अनत ही एक ऐसे लेखक हैं जिनको उल्लेखनीय माना जाता है। उनके उपन्यास 'लाल पसीना' ने काफी प्रशंसा पाई है। रामदेव धुरन्धर और राज हीरामण जैसे मॉरिषस के अन्य कथाकारों से मैं स्वयं ग्यारहँवें विष्व हिन्दी सम्मेलन में बहुत सी बातें कर चुका हूँ। फिजी, त्रिनिडाड, अफ्रीका अथवा गुआना से कोई ऐसा लेखक चर्चित नहीं हुआ जिसको प्रवासी लेखन में ख्याति प्राप्त हुई हो।

इन दो वर्गों के लेखन को ही प्रवासी साहित्य की संज्ञा दी गई है। वस्तुतः, पराए देशों में पराए होने की अनुभूति और उस अपरिचित परिवेश में समायोजन के प्रयास, नॉस्टेल्जिया, सफलताएँ और असफलताओं को ही प्रव़ासी साहित्य का आधार माना जा सकता है। राजेन्द्र यादव ने प्रवासी साहित्य को इसीलिए 'संस्कृतियों के संगम की खूबसूरत कथाएँ' कहा है। हालाँकि यह केवल संगम नहीं है बल्कि कई अर्थों में तो मुठभेड़ है।

साथ ही यह भी कहा जा सकता है कि प्रवासी साहित्य, नॉस्टेल्जिया (अतीत प्रेम) के रचनात्मक रूपों के समुच्चय है। नॉस्टेल्जिया को प्रथम दृष्टया नकारात्मक मूल्य माना जाता है, परन्तु यह उचित नहीं होगा। नॉस्टेल्जिया का अर्थ है– घर की याद या फिर अतीत के परिवेश में विचरना।

प्रवासी साहित्य में नॉस्टेल्जिया या पराएपन की अनुभूति, रचनात्मक यात्रा का केवल पहला चरण है। दूसरे चरण में, इस मनःस्थिति से संघर्ष शुरू होता है और तीसरे चरण में अपनी नई पहचान को स्थापित करने की जद्दोजहद दिखाई पड़ती है।

इन तीनों ही चरणों में, सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक परिस्थितियों का चित्रण होता है। खान–पान, पहनावा, बोली–भाषा, पर्व–त्यौहार का भी उल्लेख आता है। प्रवासी साहित्य में कविता, कहानी, उपन्यास, गज़ल आदि विधाओं में मुख्यतः लिखा गया है। परन्तु कहानी और उपन्यास इस विमर्श की प्रधान विधा बन गई है।

उषा प्रियंवदा, नीना पॉल, दिव्या माथुर आदि प्रवासी लेखिकाओं के रूप में अपनी महत्वपूर्ण जगह बनाई है। उषा प्रियवंदा का 'अन्तर्वषी' उपन्यास उन तमाम भारतीय परिवारों की जीवन–शैली का विश्लेषण करता है जो बेहतर अवसरों की तलाश और आशा में प्रवासी हो जाते हैं। विदेश में बसे युवकों से मध्यवर्गीय परिवारों की कन्याओं का विवाह सौभाग्य समझा जाता है और फिर शुरू होता है संघर्ष और मोहभंग का अटूट सिलसिला। ऐसी ही है अन्तर्वंशी की नायिका बनारस की 'वनश्री' या 'बाँसुरी' जो अमरीक़ा पहुँचकर 'वाना' हो जाती है–एक ऐसे समाज के बीच जहाँ सभी लोग 'औरों' की उपलब्धियों और लाचारियों के बीच कश्मकश में पड़ी जैसे–तैसे गृहस्थी की गाड़ी खींचती 'वाना'। पति की असमर्थताओं का दमघोट एहसास उसे क्रमशः उसके प्रति सम्वेदनहीन बना देता है, जिसकी परिणति होती है सम्बन्धों के ठण्डेपन में। पर उसके चारों ओर एक दुनिया और भी है जिसमें 'अजी' है, 'राहुल' है, 'सुबोध' है। सब एक–दूसरे से भिन्न, अपने–अपने रास्तों को तलाशते हुए। सभी 'राहुल' की तरह सफलता की सीढ़ियाँ नहीं चढ़ पाते और न ही 'शिवेश' की तरह टकराकर लहुलुहान होते हुए कारुणिक अन्त को प्राप्त होते हैं–सवाल है अपनी–अपनी क्षमता और अपनी–अपनी नियति का।

"अमरीकन मालकिन ने उसे वाना ही बना दिया। लहँगे फरिये से फ़राक से साड़ी और अबकी स्कर्ट–ब्लाउज़ व क्रिस्टीन की दी हुई, छोटी, कसी काले चमड़े की स्कर्ट और सफ़ेद ब्लाउज़, कालर पर हल्की–सी चुन्नट। बाल एकदम छोटे, सलीक़ेदार, सँवारी भौंहे, लिपिस्टिक–जैसे किसी ने पकी जामुन को कुचल दिया हो। कितने दिन अटपटा लगा था, आगे न पल्ला, न दुपट्टा, जाँघों से लेकर नीचे तक खुली टाँगे, फिर आदत पड़ गई–अच्छा लगने लगा, जैसे किसी के वाना पुकारने पर हाँ कहने की आदत पड़ गई।"

अमेरिकावासी इन पात्रों और परिवारों की जिंदगी को, उनके आपसी सम्बन्धों और संघर्षों को गहरी अन्तदृ 'ष्टि और पर्यवेक्षण–सामर्थ्य से उद्घाटित करता है यह उपन्यास। अनुभव की प्रामाणिकता और गहन सम्वेदनीयता से युक्त रचनाओं की श्रृंखला में एक महत्वपूर्ण कड़ी।

नीना पॉल ने दो उपन्यास 'तलाश' और 'कुछ गाँव–गाँव कुछ शहर–शहर' लिखे हैं। 'कुछ गाँव–गाँव कुछ शहर–शहर' उपन्यास में इंग्लैंड के लेस्टर शहर के बनने की कहानी के साथ–साथ गुजरातियों के वहाँ जमने और संघर्ष करने को गूँथा गया है। उपन्यास में निशा के माध्यम से एक गुजराती परिवार की तीन पीढ़ियों का संघर्ष दिखाया गया है। निशा, उसकी माँ सरोज बेन और निशा की नानी सरला बेन। गुजरात से युगाण्डा और युगाण्डा

से लेस्टर पहुँचे हैं। इन भारतीयों की कठोर मेहनत करने की क्षमता और कुशल व्यापार बुद्धि ने एक नए देश में भी धीरे–धीरे उन्हें इज्जत दिला दी। इस उपन्यास की विशेषता यह है कि इसमें उपन्यासकार ने सन्तुलित और निष्पक्ष दृष्टिकोण अपनाया है। भारतीयों के साथ हुए भेदभाव तो दिखाए ही गए हैं, परन्तु अंग्रेज के कानून के पाबन्द होने को भी ईमानदारी से दिखाया है। साथ ही, लेस्टर के इतिहास और भूगोल के सुन्दर चित्र खींचे गए हैं। उपन्यास को पढ़कर लेस्टर का पूरा नक्शा स्पष्ट हो जाता है।

दिव्या माथुर ने शिल्प का नव्य प्रयोग अपने पहले उपन्यास में किया है। 'शाम भर बातें' नाम के इस उपन्यास में शुरू से आखिर तक केवल संवाद ही संवाद हैं अर्थात बातें ही बातें हैं। इन बातों के बीच ही इन्सान की इन्सानियत और हैवानियत, व्यवस्था के विद्रूप तथा परिस्थितियों के पेंच सामने आते हैं। उपन्यास एक पार्टी में खुलता है और उसका अन्त भी पार्टी के साथ ही होता है। यह पार्टी मकरन्द मलिक और मीता मलिक के घर में हो रही है। हैरानी की बात यह है कि लन्दन शहर में चलने वाली इस पार्टी में लगभग सभी मेहमान भारतीय हैं। इसकी समाजशास्त्रीय पड़ताल की जरूरत है कि आखिर क्या वजह है कि वहाँ भारतीय समुदाय और दूसरे समुदायों के बीच समाजीकरण की प्रक्रिया एकदम मन्द है। युवा पीढ़ी में जरूर यह बदलाव दिखता है, परन्तु भारतीय पीढ़ी पूरी तरह से बन्द जीवन जीती है। उनके रहन–सहन और सोचने के तरीके भी भारतीय मध्यवर्गीय चरित्रों की तरह हैं। उच्चायोग से आए अधिकारी अपने को बहुत उच्च स्थान पर मानते हुए अन्य भारतीयों के साथ तुच्छ व्यवहार करते हैं। 'शामभर बातें' उपन्यास में लन्दन में बसने वाले अधिकांश भारतीयों की मनोवृत्ति और सामाजिक व्यवहारों का सूक्ष्म चित्रण किया गया है।

निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि एक परिघटना के रूप में यह साफ दिखाई देता है कि पूरे प्रवासी साहित्य की बागडोर स्त्री रचनाकारों के हाथ में है। एक नई दुनिया का पता और उसकी आन्तरिक गतिविधियों की सूचना इन कथाकारों के उपन्यासों से पाठकों को मिलाती है। इन कथाकारों की रचनाशीलता ने हिन्दी साहित्य का परिदृश्य और विस्तृत किया है।

सन्दर्भ–ग्रन्थ सूची

1. अन्तर्वषी – उषा प्रियंवदा, वाणी प्रकाषन, दरियागंज, नई दिल्ली, 1100024
2. कुछ गाँव–गाँव कुछ शहर–शहर – नीना पॉल, यश पब्लिकेशन्स, 1/11848, पंचशील गार्डन, नवीन शाहदरा, दिल्ली–110032
3. शाम भर बातें – दिव्या माथुर, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, 1100024

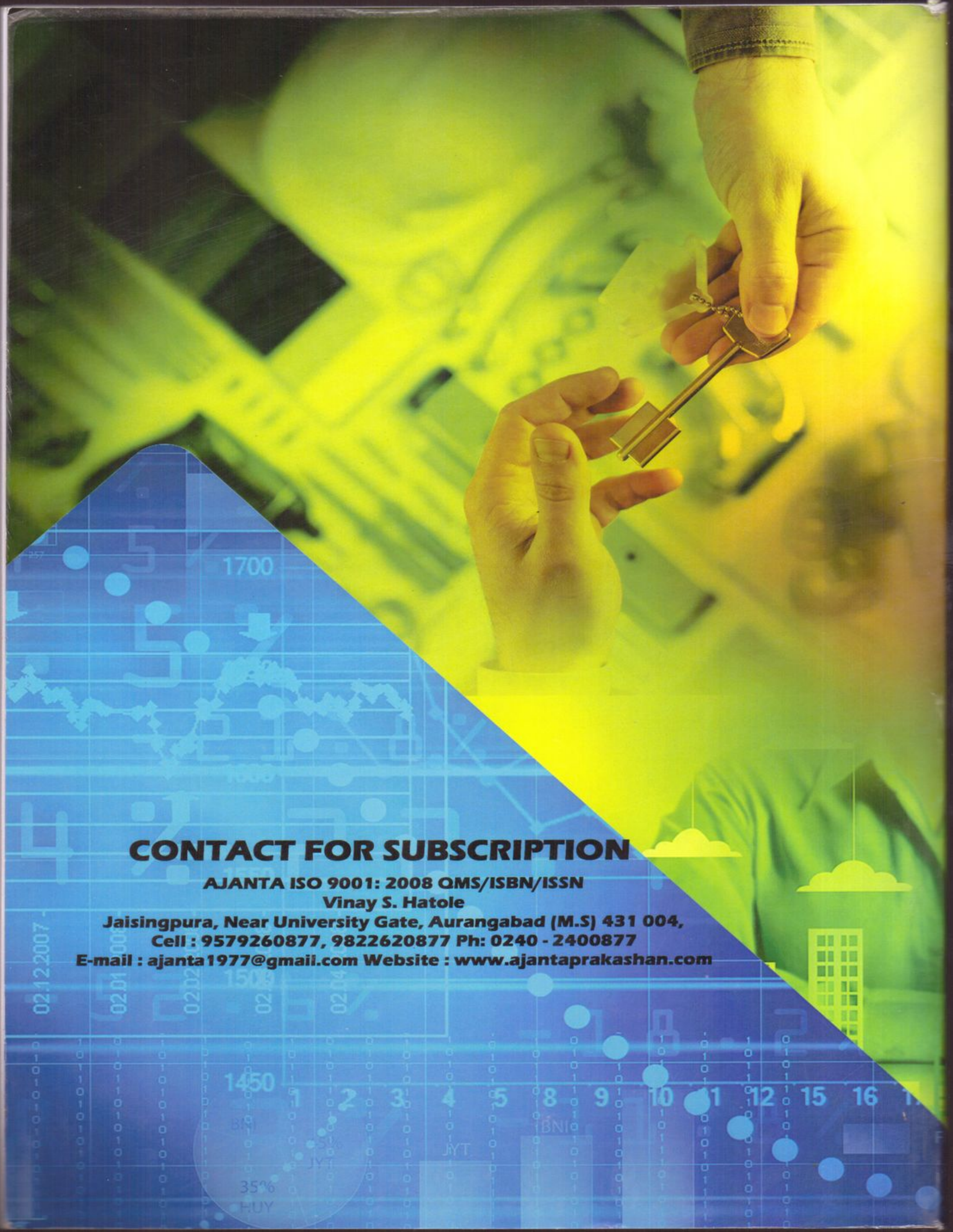

CONTACT FOR SUBSCRIPTION

AJANTA ISO 9001: 2008 QMS/ISBN/ISSN
Vinay S. Hatole
Jaisingpura, Near University Gate, Aurangabad (M.S) 431 004,
Cell : 9579260877, 9822620877 Ph: 0240 - 2400877
E-mail : ajanta1977@gmail.com Website : www.ajantaprakashan.com